चतुर्थ अध्याय

"मैत्रेयी पुष्पा के 'चाक' और 'अगनपाखी' उपन्यास में प्रतिबिंबित नारी के रूप"

चतुर्थ अध्याय

मैत्रेयी पुष्पा के 'चाक' और 'अगनपाखी' उपन्यासों में प्रतिबिंबित नारी के रूप

नारी सृष्टि की मूल है। आदिशक्ति है। ममता, दया, करूणा की मूर्ती है। दुनिया की धरोहर ही है. विशेष रूप से भारत में तो इसकी महत्ता अधिक है। डॉ. विक्रमसिंह राठोड इसके संदर्भ में कहते हैं — "भारतीय संस्कृती में नारी महत्ता को उच्च स्थान दिया गया है। विभिन्न धर्मग्रंथो में भी नारी को गृहस्थाश्रम का मूल आधार माना गया है। इसी कारण भारतीय समाज में नारी एक विशिष्ट गौरवपूर्ण स्थानपर प्रतिष्ठित है। पुरूष से भी ज्यादा नारी मर्यादा को उत्कृष्ट माना गया है।"[१] नारी ही परिवार और समाज दोनों के विकास में अपना बहुमूल्य योगदान देती है। नारी को आदरणीय माना गया है। नारी से परिवार बनता है। घर की शोभा बढती है। नारी ही मनुष्य का पालन करती है, उसका विकास करती है। नारी चाहे शिक्षित हो या अनपढ़ अपने परिवार को आदर्श बनाने में अपना तन—मन समर्पित कर देती है। नारी को सभ्यता और संस्कृति का प्रतीक माना जाता है। नारी को प्रेरणा स्त्रोत भी कहा जाता है, क्योंकि पुरूष के हर कार्य में स्त्री अपना योगदान देती है। वह पुरूष को प्रत्यक्ष — अप्रत्यक्ष रूप से प्रेरित करती है। अतः नारी अपने स्नेह, मातृत्व, सतीत्व, बलिदान, समर्पण आदि अनेक गुणों के कारण समाज तथा पुरूष के जीवन में अपना स्थान प्राप्त कर चुकी है। इसी कारण नारी को समाज

---

१. डॉ. विक्रमसिंह राठोड — राजस्थान की संस्कृति में नारी, पृष्ठ —१००

में सम्मान प्राप्त हुआ है। नारी की महत्ता को स्पष्ट करते हुए महादेवी वर्मा जी ने लिखा है, "मानव समाज ने परिवार की कल्पना के साथ नारी की महत्ता को स्वीकार कर लिया था। पुरूष के समान स्त्री भी कुटुंब, समाज, नगर तथा राष्ट्र की विशिष्ट सदस्या मानी जाती है।"[१] आगे भी नारी की महत्ता को स्थापित करनेवाले डॉ. श्यामबाला गोयल के दृष्टि से — "भारतीय संस्कृति में नारी न होती तो सभ्यता और संस्कृति न होती। अपने विविध रूपों से नारी ने पुरूष को संवर्धन, प्रोत्साहन और शक्ति दी है। वह समाज में पुरूष के लिए कभी जन्मदात्री, कभी पोषणकर्ती तो कभी स्नेह की भावधारा में प्रवाहित करनेवाली भगिनी के रूप में लक्षित होती ह।. अत: समाज में नारी के माता, पत्नी, भगिनी, पुत्री, सखी, सपत्नी, सेविका, परिचारिका, तपस्विनी आदि अनेकानेक रूप है। धार्मिक दृष्टि से वह रमा, जगदम्बा, लक्ष्मी, सरस्वती, श्री आदि रूपो में श्रद्धा और पुज्य भाव से युक्त होती है।"[२] इस तरह नारी अपने विविध रूपों में अपने कर्तव्य निभाकर समाज में आदर का पात्र होती है।

नारी के विविध रूप —

नारी समाज में जन्म देनेवाली, पालन करनेवाली माता, स्नेह करनेवाली बहन तो कभी कर्तव्य निभानेवाली पत्नी के रूप में आती है। इन विविध रूपों में नारी यथायोग्य अपना कार्य निभाती है और परिवार तथा समाज में अपना महत्त्वपूर्ण स्थान प्रस्थापित करती है। नारी का परिवार में स्थान महत्त्वपूर्ण है। वह परिवार का विकास इन्हीं पारिवारिक रूपोंपर निर्भर होता है। परिवार का सुख—दु:ख नारी

---

१. महादेवी वर्मा — श्रृंखला की कडियॉ, पृष्ठ — १८

२. डॉ. श्यामबाला गोयल — भक्तिकालीन राम तथा कृष्ण काव्य की नारी भावना, पृष्ठ — ६८

की जिम्मेदारीयॉ होती है।

आजकल हर क्षेत्र में पुरूष के सहायक के रूप में नारी के दर्शन होते है। जैसे पुरूष के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलनेवाली सहयोगिनी तथा सहधर्मिणी के रूप में वह हमारे सामने आती है। विवेच्य उपन्यासों में नारी के विविध रूप मिलते है। नारी अपने जीवन में जाने कितने रूपों में भूमिका निभाती है। उनमें वह खरा उतरने की पूरी कोशिश करती है। अपनी भूमिका निभाते समय कभी—कभी अपना अस्तित्व भूल जाती है। डॉ. घनश्यामदास भुतडा इस संदर्भ में लिखते है की, "उसका कोई निरपेक्ष अस्तित्व नही है, वह बेटी, मॉ, पत्नी, प्रेयसी जो भी है, उसी संबंध में जीवित रहने को अभ्यस्त है।"[१] अत: स्पष्ट होता है कि नारी अपने इन्हीं विविध रूपों को निभाने में धन्यता मानती है। मैत्रेयी पुष्पाजी ने विविध उपन्यासों में चित्रित नारियों के विविध रूपों के सहारे उनमें स्थित विविध पहलुओ एवं गुणों को हमारे सामने प्रस्तुत किया है। जिनका विश्लेषण करने का प्रयास मैंने प्रस्तुत अध्याय में किया है।

४.१ मॉ —

मॉ के नाम से ही एक ममता से भरी करूणामयी, आदरणीय स्त्री ऑखो के सामने आती है, जो अपने वात्सल्यमयी रूप से अपनी संतान का जीवन सॅवारती है। नारी के विविध रूपों में 'मॉ' रूप को सबसे महान तथा गौरवशाली माना जाता है। माता रूप के बाद ही स्त्री—जन्म सार्थक माना जाता है। मॉ बनना नारी का चरमोत्कर्ष माना जाता है। मॉ का रूप वात्सल्य तथा ममता से परिपूर्ण होता है।

---

१. घनश्यामदास भुतडा — समकालीन हिंदी कहानियों में नारी के विविध रूप,—पृष्ठ —५

किंतु कभी व्यक्तिगत स्वार्थ के कारण माता व्यभिचारी रूप में भी दिखाई देती है। मातृरूप की महत्ता को स्पष्ट करते हूए डॉ. श्यामबाला गोयल लिखती है, "मातृरूप में वह अपनी जननशक्ति के कारण विश्व की अक्षय निधी है, जो त्याग, तपस्या, निस्वार्थ, साधना, वत्सलता, ममता की साक्षात देवी है।"[१] इस तरह हम कह नही सकते है की 'मॉ' मॉ होती है, उसकी कमी कोई पूरी नही कर सकता। मॉ के रूप की तूलना किसी अन्य रूप से नही हो सकती। विवेच्य उपन्यासों में मॉ का रूप विभिन्न अंगों में प्राप्त होता है। 'चाक' में चित्रित बडी बहू, सारंग हरिप्यारी आदि नारियों का मातृरूप वात्सल्यमयी रहा है। इसमें वात्सल्य के संयोग तथा वियोग दोनों पक्षो का सजीव अंकन हुआ है। सारंग का बेटा चंदन पढाई के लिए अपने चाचा के पास आग्रा जाता है। तब वियोग के वात्सल्यजन्य ताप में झुलसती उसकी मॉ सारंग अपनी हमदर्दी बडी बहू से कहती है, "तुम्हे चैन कैसा पडा था बीबी? मै तो पागल हुई जा रही हूँ। रोटी देखकर लगता है, वह भूखा होगा। पानी पिऊँ तो, वह प्यासा होगा। नल के पास जाते ही चंदन की दुबली देह ऑखों के सामने प्रकट हो पडती है, नादान नहाया होगा कि नही?"[२] यहॉ मॉ के रूप में सारंग का भी चित्रण हुआ है। सारंग अपनी बहन रेशम की हत्या का बदला लेना चाहती है। लेकिन उल्टा डोरिया ही सारंग को उसके बेटे को मारने की धमकी देता है। क्योंकि वह उसे जेल भेजना चाहती थी। अपने बेटे को बचाने के लिए सारंग के पति उस पढ़ने के लिए आग्रा भेजते है। उसके विरह में सारंग का एक मॉ का हृदय तडप

---

१. डॉ. श्यामबाला गोयल — भक्तिकालीन राम तथा कृष्ण काव्य की नारी भावना, पृष्ठ ७७

२. मैत्रेयी पुष्पा — चाक, पृ. ६९

उठता है। उसकी याद में सारंग हर वक्त डुबी रहती है। सोते समय उसे चंदन की याद आती है। यहाँ सारंग का चिंतीत विरहिणी माँ रूप देखने को मिलता है। सारंग के रूप में यहाँ संतान के प्रति अपनी जिम्मेदारीयाँ निभालेनेवाली माँ परिलाक्षित होती है। रेशम की सास हुकुमकौर को भी पाँच बेटे थे। अपने बेटे करमीवर की मृत्यु के पश्चात विधवा बनी रेशम को उसकी सास देवर डोरिया की बाँह थामने को कहती है ताकि घर की इज्जत बनी रहे। हुकुमकौर अपने बेटे डोरिया की गृहस्थी बसाना चाहती है। उसकी ताकद देखकर उसे कोई लडकी नही दे रहा था। अपने बेटे का ब्याह हो जाए इसलिए वह अपनी बहू रेशम को मजबूर करती है। यहाँ माँ का अपने बेटे के प्रति पनपता प्यार और साथी रूप दिखायी देता है।

'अगनपाखी' में चित्रित भुवन और मन्नू की माँ गेंदारानी का मातृरूप बेबसिंयों एवं विवंचनाओं से त्रस्त रहा है। गेंदारानी की बड़ी बेटी मन्नू का ब्याह चौदह साल की अवस्था में हुआ था। तब गेंदारानी को दुसरी बेटी भुवन हुअी थी। जन्म के पश्चात उसके पिता को मुखिया के आदमियों ने मार डाला। तब भुवन की सारी जिम्मेदारी अकेली गेंदारानी ने उठायी थी। उसे माँ बाप दोनों का प्यार दिया। भुवन की बहन मन्नू का बेटा चन्दर, बिरजू और लल्लू से प्यार करती थी। वहाँ तीनों लडके भुवन के साथ खूब खेलते थे। माँ के रूप में मन्नू अपनी जिम्मेदारी अच्छी तरह से निभाती है। नारी की विविध जिम्मेदारीयाँ में माँ की जिम्मेदारी सर्वश्रेष्ठ होती है।

भुवन जब बडी होती है तब उसकी माँ गेंदारानी की उसकी शादी की विवंचना होती है। क्यों भुवन पर पिता का साया नहीं था। वह अपने पोते चन्दर का हाथ अपने हाथ में लेकर कहती है,"चन्दर, अपने पिताजी से कहना बेटा की भुवन के लिए कोई लडका... इतने

दिन से खोज रहे है, अभी कोई मिला नही? संग की बिटियॉ लरकौरी हो गयी। इतके उमर में मन्नू के हो लिए थे।"[१] इस तरह अपनी बेटी भुवन की विवाह की चिंता उसे खाए जाती है। वह ऑखे भरकर चन्दर से कहती है कि, "मताई और बाप दोनों का धरम हमें ही निभाना है, सो बेटा चैन नहीं पडता।"[२] वह खुद अकेली बेबसियों और विवंचनाओं से त्रस्त रहती है।

भुवन की शादी बड़े घराने के कुँवर विजयसिंह से होती है। तब गेंदारानी बहुत खुश हाती है। वह उसके बिदाई के वक्त बहुत रोती है। थोडे दिनों बाद पथफेरे के लिए भुवन मायके आती है, तो बहुत रोती है। यह देखकर मॉ गेंदारानी का कलेजा फटता है। जब बेटी बताती हे कि उसका जवाई विजयसिंह पागल है। तब वह उदास हो जाती है। यहॉ मातृरूप की घोर प्रवचंना एवमं प्रताड़ना का अंकन हुआ है। फिर मॉ गेंदारानी अपनी बेटी भुवन को समझाबुझाकर ससूराल जाने को कहती है। यहॉ मॉ गेंदारानी के मातृरूप की कर्तव्यदक्षता और ध्येयनिष्ठता का चित्रण परिलक्षित होता है।

भुवन की मॉ बचपन में उसे प्यार करती साथ ही डॉट – फटकर भी लगाती। एक दिन भुवन अपने बहन के बेटे लल्लू की भूख मिटाने के लिए मैतरानी के घर से खाना देती है, तब उसे मॉ हाथ से नहीं डण्डे से बहुत मारती है।

यहॉ मॉ के विविध रूपों चित्रण का हुआ है। इसलिए इस दुनिया में मॉ का रूप यह सर्वश्रेष्ठ होता है। दुनिया में सब कुछ मिलेगा पर मॉ का प्यार नही मिलता ऐसा कहते हैं और इसमें दो राय नहीं है।

---

१. मैत्रेयी पुष्पा – अगनपाखी, पृ. ५०

२. मैत्रेयी पुष्पा – अगनपाखी, पृ. ५१

४.२ बेटी :—

बेटी यह दोनों घर का उजाला होती है। हमारी धरती यह बेटियों के पैदाईश से संपन्न है। पहली बेटी जब पैदा होती है तब गॉवो में ऐसा कहा जात है कि — 'पहली बेटी घी रोटी।' इसी बात को झूठलाया नहीं जा सकता। डॉ. श्यामबाला गोयल भी इसी बेटी के संदर्भ में कहती है,"नारी—जीवन में कन्या एवं बेटी रूप उसके जीवन का सोपान है जो उसके शैशवावस्था और किशोरावस्था का परिचायक है। नारी विवाह से पूर्व अल्पायु तक कन्या रूप मं देखी जाती है और विवाह के उपरांत वह युवती होकर भी माता—पिता के लिए पुत्री ही मानी जाती है, किंतु उसे कन्या रूप से नहीं देखा जाता।"[१]

बेटी रूप का परिवार में प्रेम, ममता, वात्सल्य, स्नेह का पात्र होता है। माता—पिता के अमिट प्रेम को पानेवाली पुत्री भी उतना ही प्रेम अपने माता—पिता पर करती है। जैसे मॉ बाप के अपने बेटी के प्रति कुछ कर्तव्य होते है उसी तरह बेटी के भी मॉ—बाप के प्रति कुछ कर्तव्य होते है। अपने मॉ—बाप के सुख दुख का ध्यान रखना पडता है। उनकी आज्ञा का पालन करना पड़ता है। उनकी मान—मर्यादा तथा भावनाओं को ठेंस न पहुँचे इसका खयाल रखना पडता है। इसी का प्रतिक 'अगनपाखी' की बेटी भुवन है।

भुवन अपने पिता के प्रेम से वंचित है। घर की सारी जिम्मेदारीयॉ अकेली मॉ उठाती है। इसलिए भुवन भी मॉ को मदद करती है। घर का सारा काम करती है। रसोई में मॉ का हाथ बॅटाती है। वह खेत में भी काम करने जाती है। इस प्रकार वह घर की

---

१. डॉ. श्यामबाला गोयल — भक्तिकालीन राम तथा कृष्ण काव्य की नारी भावना, पृष्ठ २५३

जिम्मेदारीयों को निभाती है।

भुवन मॉ की इच्छा के अनुसार कुँवर विजयसिंह से शादी करती है। लेकिन विवाह कें बाद जब उसे पता लगता है कि विजयसिंह पागल है तो वह मायके आनेपर ससुराल में वापस जाने से इन्कार करती है। पर उसी मॉ समझाकर कहती है कि,"बेटी, तू तप में उतरी है, कोई रंडी वेसा नहीं घडी–घड़ी आदमी बदले। तेरे तप से विजयसिंह ठीक हो जाएगा एक दिन!"[१] भुवन अपने मॉ और घर की इज्जत बनाए रखने के लिए ससुराल जाने को तैयार होती है। यहॉ दिखाई देता है कि ''अगनपाखी' की भुवन एक विवेकशील, कुशाग्र, बुध्दिवाली बेटी है, जो अपनी पारिवारीक विवंचनाओं की जड़ व्यवस्था की भ्रष्टता में देखती है, न कि नियति में। यहॉ भुवन का बेटी रूप दमित एवं अवहेलित रहा है। भुवन अपने जीवन में इज्जत और मर्यादा का पालन करके दोनों खानदानों की इज्जत करती है। डॉ. हरिशंकर शर्मा लिखते है, "पुत्री नारी का शाश्वत रूप है। कोई नारी बहन, पत्नी और माता हो या न हो परन्तु वह किसी की पुत्री अवश्य होती है।"[२]

बेटी, परिवार में अपना विशेष महत्व रखती है। परंतु सभी बेटियों के नसीब में प्रेम, वात्सल्य एवं ममता, नहीं होती, कभी कभी यह बेटी रूप उसके लिए अभिशाप बन जाता है। बेटी होते हुए भी उसके जीवन में बहुत सारे उतार–चढाव आते है। उपेक्षित और प्रताड़ित जीवन भी उसे जीना पड़ता है। 'अगनपाखी' के भुवन यही स्थिती दिखायी देती है। भुवन बेटी रूप में विवश और करूण दिखायी देती है।

---

१. मैत्रेयी पुष्पा – अगनपाखी, पृ. ५०
२. डॉ. हरिशंकर शर्मा – हजारी प्रसाद द्विवेदी के उपन्यासों में नारी, पृ. १३३

भुवन की बहन मन्नू भी बेटी होने की सभी जिम्मेदारीयॉ निभाती है। भुवन के ससुराल जाने के बाद वह अपने मॉ के पास बार–बार आती है, उसका खयाल रखती है। उसका खाना पकाकर जाती है। खेती में भी मॉ की मदद करती है। अपने पति से झगड़ा करके वह मॉ को देखने बार–बार शीतलगढ़ी आती है। खेती में काम करने जब मजूर नहीं आते तब मॉ के साथ कटनाई के लिए जाती है। मॉ अकेली होने के कारण उसे किसी का सहारा नहीं था इसलिए मन्नू अपना बेटी होने का फर्ज निभा रही थी।

'चाक' की गुलकंदी भी बेटी रूप में रूढ़िवादी संकीर्ण मूल्य – मर्यादाओं से ऊपर उठ चुकी है। 'चाक' में विद्रोही, इज्जत और मर्यादा का पालन करनेवाली ममतामयी बेटी का चित्रण हुआ है।

विवेच्य उपन्यासों में बेटी का रूप विविधता से देखने को मिलता है।

४.३ पत्नी :–

बेटी को विवाहोपरांत पत्नी रूप में महत्वपूर्ण भूमिका निभानी पड़ती है। भारतीय परिवार में नारी का पत्नी रूप विशेष महत्वपूर्ण स्थान रखता है। सिर्फ परिवार ही नहीं बल्कि समस्त विश्व की सुख शांती की वह अधिष्ठाती है। उसके ही ऑचल में मानवता की परवरिश होती है। वहीं अपनी ममता, समता, उदारता ओर त्याग आदि के कोमल भावनाओं का सजगता से मानव को विश्वबंधुत्व का पाठ पढ़ा सकती है। उसके संबंध में डॉ. वल्लभदास तिवारी लिखते है – "गृहिणी सचिव: सखी: मित्र: प्रियाशिष्या ललिते कलाविध्यो।।"[१] अर्थात पत्नी गृहिणी, गृहकार्य में सखी, एकांत में मित्र और ललित कलाओं में प्रियशिष्या होती है। नारी के पारिवारीक संबंधो में

पति—पत्नी का संबंध सबसे महत्वपूर्ण है। मानव सभ्यता के आदिकाल से पत्नी के धर्म और मर्यादा का महत्त्व स्विकार किया गया है।

डॉ. मठपाल सावित्री पत्नी के कर्तव्य के संदर्भ में कहती है कि,"पतिव्रत पत्नी का परमधर्म योग्यता, कुशलता और सेवा से दाम्पत्य जीवन को निरन्तर सुचारू रूप से चलाना पत्नी का धर्म है। पति चाहे अपने कर्तव्य से कभी विमुख नहीं होती, यहीं उसका सनातन आदर्श है।"[२]

नारी अपने पति के सुख—दुख, आशा—निराशा, आचार—विचार और महत्वकांक्षाओं को अपनाकर ही सहचारिणी बनती है। विपत्ती में धीरज बंधाती है और परिश्रम में उसका पूरा—पूरा खयाल रखती है। पति के विचारों को, मन:स्थिती को समझना और स्वयं को उसके अनुरूप ढालना उसका कर्तव्य है। प्राचीन काल से यह परंपरा चलते आ रही है। जैसे राम—सीता, सत्यवान—सावित्री, हरिश्चंद्र—तारामती आदि थी। पत्नी के रूप में असफल आदर्श पत्नी, त्याग करनेवाली पत्नी, पीड़ित पत्नी, पति के प्रेम से वंचित पत्नी, आधुनिक विचारोंवाली पत्नी आदि रूप दिखाई देते है।

'चाक' में अकित सारंग का पत्नीरूप विवेकशीलता, धैर्यशीलता, साहसिकता एवं आत्मनिर्णयक्षमता से संपृक्त नजर आता है। गॉव के प्रधान पद के लिए सारंग का पति रंजीत भी अपना नाम देता है। लेकिन सारंग उसके ससूर और गॉव के श्रीधर मास्टर सारंग का पर्चा भरते है, तब पति रंजीत सारंग से नाराज होता है। दोनों में वादविवाद होता है। तब सारंग को पत्नी रूप में अपमान, उपेक्षा एवं प्रताड़ना का सामना करना पड़ता है। सारंग पत्नी होते हुए

---

१. डॉ. वल्लभदास तिवारी — हिंदी काव्य में नारी, पृ. १३१

२. डॉ मठपाल सावित्री — जैनेंद्र की उपन्यासों में नारी पात्र, पृ. २२

भी स्वतंत्र रूप से अपने विचारों को, निर्णय को अभिव्यक्त नहीं कर पाती, जिसमें पति–पत्नी के संबंधो में तणाव दिखाई देता है।

सारंग की बहन रेशम की हत्या हो जाने के बाद सारंग उसका बदला लेना चाहती है। इस मामले में वह अपने पति रंजीत का साथ पाना चाहती है। तब रंजीत अच्छे पति कि तरह उसकी मदद करता है। सारंग भी उस वक्त हर रोज सुबह उठकर पति की चरणधुली माथे से लगाती है। पति के साथ प्यार से बर्ताव करती है। वहॉ सारंग का आदर्श पत्नी रूप दिखाई देता है। पहले कुछ दिनों तक रंजीत सारंग का साथ देता है। जब बेटे की जान को खतरा होने लगता है, तो वह सारंग का साथ छोड़ देता है, वह अपने बेटे की जान बचाना चाहता है। लेकिन यहॉ सारंग का पत्नी रूप विवश और मजबूर दिखाई देता है। यहॉ पत्नी का उपेक्षित रूप परिलक्षित होता है।

'चाक' में अंकित दलवीर की पत्नी, लौंगसिरी बीबी, बडी बहू, मनोर की बहू आदि का पत्नी रूप दमित एवं प्रताड़ित रहा है।

सारंग तथा फत्तेसिंह की पत्नी के विद्रोही तेवर 'चाक' में साफ उजागर हुए है।

सारंग पत्नी रूप में स्वाभिमानी, समंजस, विवेकशील एवं आत्मनिर्णयक्षम भी रही है। धन दौलत का या वस्त्र आभूषण की बजाय पति की नेकता एवं बहादूरी चाहनेवाली, सारंग असामान्य पत्नी है। सारंग पूर्वाध में जितनी उपेक्षित, प्रताड़ित रही उतनी ही उत्तरार्ध में धैर्यशील, जुझारू, यथार्थभिमुख, आत्मनिर्णयक्षम रही। भारतीय परंपरा में पत्नी का पति के प्रति निष्ठावान रहना अर्थात पतिव्रता होना प्रथम धर्म माना गया है। 'अगनपाखी' की भुवन पतिव्रता धर्म का पालन करती है। उसका विवाह धोखे से उसके जिजाजी एक पागल से

कराते है। पहले कुछ दिन भुवन यह सदमा बर्दाश्त नहीं करती। पर मॉ के समझाने पर वह पति को परमेश्वर समझकर वापस ससुराल जाती है। वह अपने पागल पति कुँवर विजयसिंह को नहा—धोकर तैंयार करती है। पति को शहद में दवा देती है। उसे पीने को दूध देती है। गीले कपड़े से देह पोंछकर धुले इस्तरी किए हुए कपडे पहनाती है। इस प्रकार वह अपने मनोरूग्ण पति की सेवा करती है। पति की देखभाल करती है। रात में उठकर वह भागे नही इसलिए उनका पॉव अपने पॉव के साथ रस्सी से बॉध देती है। इस प्रकार भुवन अपना पत्नीधर्म निभाती है। पति के सुख—दुख को अपना मानती है। पति के हर कार्य में उसका साथ निभाती हैं। इसलिए उसे अर्धांगिनी माना जाता है। जैसे उमा—शंकर, राधे—श्याम, सीता—राम, लक्ष्मी—नारायण आदि अपने पति के सुख की कामना करती है। मानसिक तथा शारिरिक रूप से आत्मदान करती है।

'चाक' के रेशम का पति करमवीर सिंह के पत्नी असीम प्रेम के साथ उजागर हुआ है। लेकिन के मृत्यु के बाद वह पति प्रेम से प्यासी ही जाती है। और वह पॉच महीने में ही गर्भवती जाती है। यहॉ रेशम का पत्नी रूप पतिता रूप दिखायी देता है। सारंग भी अपने पति रंजीत से छिपाकर श्रीधर से शारिरिक संबंध प्रस्थापित करती है, उसकी ओर आकर्षित होती है। यहॉ भी सारंग का पतिता रूप दिखता है। जो पत्नी अपनें पति को धोखे में रखकर किसी और से अनैतिक संबंध प्रस्थापित करती हैं। जो प्यार पति को देना चाहिए वह किसी और को देती है। और अपने संबंधो को छुपाए रखती है —वह पतिव्रता स्त्री नहीं पतिता स्त्री ही हो सकती है।

'अगनपाखी' की भुवन ओर उसकी बहन मन्नू का पत्नी रूप पारंपारिक हो रहा है। भुवन की बहन भी अपनें पति के साथ

वादविवाद, झगडा करती है और बार–बार संघर्ष होता है। फिर भी मन्नू अपने पति से प्यार करती है। भुवन का पत्नीरूप स्वत्वशील और विद्रोही रहा है। साथ ही दमित और आंतरिक विद्रोह का परिचय भुवन के रूप में मिलता है। मैत्रेयीजी के विवेच्य उपन्यासों में पत्नी में नारी की विवशता, छलना, प्रताड़ना एवं मजबूरी आदि की अभिव्यक्ति हुई है।

४.४ सास –

नारी के पारिवारिक रूप में सास का रूप भी विशेष महत्व रखता है। जो पहले किसी की मॉ थी, बेटे के विवाह के बाद उसे सास का रूप निभाना पड़ता है। भारतीय परिवार में कौनसी भी सास अपने कर्तव्य को भूल जाती है और अपने सास के अधिकारों पर सबसे अधिक ध्यान देती है। परंपरागत रूप से भारतीय और कडवाहट से युक्त एवं कठोर माना गया है। यह सिलसिला आजीवन चलता रहता है। सासद्वारा पीडीत बहू सास बननें पर उसी पीड़ामय चक्र को परिचालित करती है। इसके विपरित कुछ सासे ऐसी भी होती है। जो अपने बहु को अपनी बेटी मानकर स्नेह की वृष्टि करती है। दोनो में प्रेमपूर्ण और अपनेपन का रिश्ता होता है। 'चाक' उपन्यास में सास का विद्रोही छलकपटवाला रूप नजर आता है। मैत्रेयी पुष्पाजी के विवेच्य उपन्यासों में नारी के सास रूप को परंपरागत रूप में चित्रित किया गया है। कहीं वह अत्याचारी रूप में कहीं ममतामयी सास ओर कहीं दुश्मन के रूप में चित्रीत किया है। 'चाक' की सास हुकुमकौर अपनी बहु रेशम के प्रति दुश्मनी का भाव दिखाती है। क्यों रेशम विधवा होकर भी पॉच महीने में ही गर्भवति हो जाती है। इस बात का पता चलनेपर रेशम की सास को गुस्सा आ जाता है। वह कडे रूख के साथ कहती है,"रंडी, मेरे पूत की

चिता तो सीरी हो जाने देती"[१] इस प्रकार वह उसे गालियॉ देती है। घर की इज्जत बचाने के लिए वह रेशम से कहती है कि, "बेटी, मेरी पत राख। रेसम, मेरी बछिया इस घर की लाज राख ले। जो कर बैठी सो कर बैठी। भूल ठहरी। अब तू ऐसा कर डोरिया की बॉह थाम ले। सब परदा ढक जाएँगे, मेरी बेटी सब परदा....घर की बात घर में रहेगी।"[२] इस तरह रेशम की सास रेशम को बिनती करते हुए कहती है। इस तरह रेशम की सास उसके साथ कभी मीठी बातें करती है, तो कभी गंदी गालियॉ देकर झगड़ा करती है। सास की इस बिनती की बात से रेशम इन्कार करती है। तब सास चोटीं पकड़कर रेशम को बहुत मारती है। उसके गर्भ को मारने की कोशिश करती है। यहॉ सास का छलकपट रूप दिखाई देता है। वह सास के रूप में कर्कशा नजर आती है। बहू को गुलाम और पॉव की जूती समझनेवाली और उसका अमानवीय शोषण तथा बात–बात पर ताने देनेवाली सास का वास्तविक चित्रण किया है। हुकुमकौर बहू रेशम का गर्भपात करने के लिए उसे विषैली शर्तिया दवा देना चाहती है। लेकिन गिलास के हाथ से छूटने के कारण वह बच जाती है। आखिर एक दिन उसके ससूरालवाले अपनी इज्जत बचाने के लिए उसकी हत्या करते है। यहॉ बहू का नितांत शोषक रूप में शोषण करनेवाली सास का परंपरागत रूप दिखाई देता है। यहॉ नारी ही नारी का शोषण करती हुई दिखाई देती है। विवेच्य उपन्यास में सास रूप में नारी का परंपरागत दृष्टीकोन उजागर हुआ है। सास–बहू में आत्मीय संबंध अभावात्मक रूप में प्राप्त होते है। 'चाक' के चरणसिंह बौहरें की मॉ अपनी बहू को रौबनुमा बर्राहट तले दबाती है। हुकुमकौर के सास रूप में

---

१. मैत्रेयी पुष्पा – चाक, पृ. क्र. १९

२. मैत्रेयी पुष्पा – चाक, पृ. क्र. १९

पारंपारिक मर्यादा वादिता के साथ मानवोचित संवेदनशीलता भी नजर आती है। वैधव्यगत नैतिक प्रतिमानों को तोडनेवाली बहू रेशम के प्रति खूँखारता बरतनेवाली हुकुमकौर अपनी बहू रेशम को छाती से लगाकर रोती है और कहती है,"रेसमियॉ, मेरा बस चले तो मैं तुझे अपनी पलकों में छिपा लूँ, पर मर्दो को क्या जवाब दूँगी रीऽऽऽ..."[१]

'अगनपाखी' की भुवन की शादी भी धोखे से पागल पति कुँवर विजयसिंह से होती। उसके बाद सूसराल जाने पर भुवन अपनी सास से पूछती है कि उनका पूत्र इस तरह पागल क्यों है? तब सास ने कह दिया कि,"मै मर जाऊंगी तो इस अभागे को कौन पूछेगा? भाभी भौजाई किसकी हुई है? भाभी भौजाई किसकी हुई है? भुवन, मॉ के बाद आदमी को उसकी औरत ही सॅभालती है।" इसप्रकार भुवन की सास का पारंपारिक रूप सामने आता है। वह अपने पागल बेटे का इलाज कराने के बजाय बहू को संन्यास लेने को कहकर जोगिन बनाती है। पति के मृत्यु के पश्चात भुवन को सती जाने का पाठ उसकी सास पढ़ाती है। यहॉ सासद्वारा पीड़ित बहू का चित्रण भी होता है।

४.५ बहू :—

मैत्रेयीजी के विवेच्य उपन्यासों में बहू रूप में नारी विविध पहलुओं के साथ चित्रित है। नारी—जीवन का सबसे महत्वूपर्ण अंग सास—बहू का रिश्ता है।

हर एक बेटी अपने मॉ—बाप का घर छोडकर पराए घर में पराए लोगों के पास जाती है। अजनबी लोगों के साथ घुलमिलकर रहती है। ऐसी बहू ससूरालवालों से कभी सम्मान प्राप्त करती है, तो कभी अपमानित हो जाती है।

'चाक' की रेशम और सारंग तथा 'अगनपाखी' की भुवन बहू के रूप में धैर्यशील एवं साहसी है। भुवन बचपन से अपने पिता के स्नेह से वंचित रही। घर की सारी जिम्मेदारीयॉ अकेली मॉ को उठानी पडती है। भुवन की बहन मन्नू का पति भुवन के लिए रिश्ता निकालता है। और भुवन भी शादी धोखे से मनोरूग्ण विजयसिंह से हो जाती है। वह अपने मॉ के खातिर ससूराल में रहती है। अपने पति का इलाज बड़े अस्पताल में कराना चाहती है। लेकिन उसके ससूरालवाले अंधश्रध्दालू है। उसे संन्यास लेकर जोगिन बनने को कहते है। भुवन अपना दुख चंदर को बताती हैकि तू भी देख ले, कंठी मेरे पास है। मैं उस डरावने स्वामी का मुँह नहीं देखना चाहती, पर देखना पड़ता है। रोती रही, विनंती मिन्नतें करती रही, पर कुछ न हो सका। रोते हुए को लोग और भी सताते हैं। मुझे तड़पते देखकर इस घर के लागों को जरूर कोई सुख मिलता है। कमजोर घर से आई है। कुचला दो तब भी कोई कुछ बोलनेवाला नहीं।"[१] इस तरह भुवन ससूराल में हो रहें अत्याचारों को झेलती है।

भुवन को पति के मृत्यु के पश्चात सती चढ़ाने की बात होती है। तब वह आखिरी इच्छा के रूप में देवी के दर्शन के लिए जाती है। और वहॉ से गुप्त मार्गद्वारा पुजारीजी की मदद से अपनी जान बचाने के लिए ससूराल के लोगों के चंगुल से भाग जाती है। भुवन के देवर अजयसिंह अपने स्वार्थ के लिए उसे सती चढ़ाकर सारी जायदाद खुद ऐंठना चाहते हैं। लेकिन जब उन्हें लगता है किं भुवन मर गई तब उसका पुतला बनाकर सती चढ़ाते है।

कुछ दिनों बाद भुवन, चंदर का साथ लेकर कचहरी में अपने पति की जायदाद में हक मॉगती है। यहॉ भुवन का प्रतिशोध रूपी

---

१. मैत्रेयी पुष्पा — अगनपाखी — पृष्ठ ९५

बहू का रूप दिखायी देता है।

भुवन अपने ससुराल के अमानवीय अत्याचार, अन्याय तथा शोषण के प्रति असहनीयता दिखाते हुए अपने देवर से प्रतिशोध ले ती है। यहाँ उसका विद्रोही बहू रूप चित्रित हुआ है।

'चाक' में हुकुमकौर और बहू रेशम के बीच के संघर्ष को दिखाकर सास–बहू संघर्ष को प्रस्तूत किया है। हुकुमकौर का बेटा करमीवर फौजी में था। विषैली दारू पीने से वह मर जाता है। और रेशम विधवा बन जाती है। विधवा बनी रेशम अपने सास के घर में ही रहती है। वह जवान और सुंदर होने के कारण यौन–इच्छाओं को काबू नही कर पाती और पति के मौत के बाद पॉच–छे महीने में गर्भवती बनती है। जब इस बात को वह अपने सास को बताती हे तब सास गुस्से से पागल होती है औरर रेशम पर चिल्लाती है,"मेरे बेटे की मौत से दगा करनेवाली हरजाई बदकार। तेरा मुँह देखने से नरक मिलेगा, खेती जलेगी, अकाल पडेगा। गंगा में सौ अस्नान करो, तो भी यह महापाप छूटना नही।"[१] इस तरह सास अपनी बहू को गंदी गालीयॉ देती है। सास–बहू में झगड़ा होता है। सास को बहू के इस पाप को सहना काफी मुश्किल हो जाता है। अत: वह रेशम को मायके जाने को कहती है। तब रेशम इन्कार करती हैं। इतना बड़ा पाप और ऊपर से ऐसी गुस्ताखी देखकर सास अपने क्रोध पर काबू नहीं कर पाती और उसकी चोटी को बेदर्दी से झटके देती है। इस तरह सास–बहू की लड़ाई आखिर मारने–मरवाने तक आती है। यहॉ सास बहू के संघर्ष का चित्रण दिखायी देता है। मर्यादा और नैतिकताओं को तोड़नेवाली निर्भिक साहसी एवं संयमी बहू के रूप में रेशम का और भुवन का यथार्थ अंकन हुआ है।

'चाक' की रेशम अपने बहू रूप की प्रताड़ना को एक सीमा तक सहकर जहॉ अपनी संयमता का परिचय देती है, वहीं असहायता में विद्रोह पर उतर जाती है। रेशम के माध्यम से रूढ़िवादी मर्यादाओं को बेहिचक तोडनवोली और अस्तित्व और अस्मिता जैसे बुनियादी अधिकरों के लिए जी जान से संघर्ष करनेवाली बहू का अंकन हुआ है।

'अगनपाखी' की भुवन बहू रूप में अन्यायी, अत्याचारी, अमानुषिक एवं भ्रष्ट पारिवारिक व्यवस्था के प्रति विद्रोह करती है। भुवन का बहू रूप नितांत प्रताडित रहा है। रूढ़िवादिता को त्यागकर मानवोचित यथार्थ के धरातल पर उतर आनेवालो परिवर्तनशील बहू है।

४.६ भाभी :—

भारतीय संस्कृती में भाभी को मॉ का प्रतिरूप माना जाता है। मॉ के रूप में उसकी भी पूजा की जाती है। लेकिन विवेच्य उपन्यासों में भाभी रूप की अवहेलना हुई है। अपने देवर के प्रति कठोर बर्ताव करनेवाली भाभी, देवर—जेठ से नफरत करनेवाली भाभी के रूप में नारी का परिचय मिलता है।

'चाक' उपन्यास में रेशम और सारंग दोनों भाभी रूप में चित्रित हुई है। रेशम का पति करमवीरसिंह फौज में मर जाता है। विधवा बनी रेशम अपनी यौन इच्छओं को काबू में न रखकर पॉच—छः महिने में ही गर्भवती बन जाती है। इस बात का ऐलान करती है, तब बुढ़ियॉ सास हुकुमकौर उसे गालियॉ देकर कहती है,"मेरे बेटे की मौत से दगा करनेवाली हरजाई बदकार। तेरा मुॅह देखने से नरक मिलेगा, खेती जलेगी, अकाल पडेगा। गंगा में सौ अस्नान करो, तो भी यह महापाप छुटना नहीं।"[१] उसकी सास इस पाप को छिपाने के लिए

---

१. मैत्रेयी पुष्पा — अगनपाखी — पृष्ठ ९५

पितासमान जेठ डोरिया की बॉह थामने को कहती है। लेकिन रेशम यह रिश्ता जोडने से इन्कार करती है। और रेशम अपने भाभी रूपका कर्तव्य निभाती है। लेकिन देवर डोरिया उस पर बूरी नजर डालता है। वह अपने हाथ नहीं लगती इसलिए एक दिन उसकी हत्या कर डालता है।

'चाक' में देवर—भाभी संबंधो में किस तरह नैतिक पतन होता है, यह मैत्रेयीजीने रेशम और डोरिया के माध्यम से स्पष्ट किया है।

'चाक' की सारंग भी अपने देवर दलवीर के साथ भाई जैसा व्यवहार करती है। उसके पास अपने बेटे चंदर को पढ़ाई के लिए भेजती हैं सारंग भाभी के रूप में आदर्श नारी—पात्र है। देवर दलवीर और भॅवर से उसका अच्छा सलूक है। भाभी और देवर के रिश्ते को वह माता—पुत्र के समान मानती है। सारंग एक वात्सल्यमयी भाभी के रूप में दिखाई देती है।

'अगनपाखी' की भुवनमोहीनी भी पारंपारिक भाभी के रूप में दिखती है। ससूराल में जाने के बाद वह जेठ के सामने पढ़ी करती है। जेठ के सारे काम करती है। उसके जेठ हाथ धोने के लिए पानी मॉगते है, खाना परोसने को कहते है, कपडे तैयार करने को कहते है। इस तरह भुवन अपनी जेठ की जिम्मेदारीयॉ निभाती है। पर भुवन के पति विजयसिंह के देहांत के बाद उसे ससुरालवाले सती चढ़ाना चाहते है। लेकिन पुजारी की मदद से वह उन लोगों के चंगुल से भाग जाती है। तब वह जेठ के स्वार्थी हेतू से परिचित होती है। जेठजी विजयसिंह के साथ भुवन को मृत दिखाकर सारी जायदाद पर अकेले हक बरकरार करते है। कुछ दिनों बाद भुवन दुनिया के सामने आती है और अपने जेठ अजयसिंह के सामने आती है और अपने जेठ अजयसिंह के हकदारी पर एतराज करती है। भुवन कचहरी में अर्ज

करती है कि उसके पति की जायदाद का हक उसे सौंपा जाए। इस प्रकार भुवन भाभी के रूप में निड़रता से मुश्किलों का सामना करती है। भुवन अपने जेठ की इरादों को नाकामयाब बनाती है और अपने हक के लिए लड़ती है।

४.७ बहन :—

विवेच्य उपन्यासों मे प्राप्त नारी के विविध रूपों में बहन के रूप को भी चित्रित किया गया है। नारी समाज में विशेषत: माता, पत्नी, पुत्री इन तीनो रूपों में विशेष महत्त्व रखती है। और इन्ही के मध्य नारी के अनेक सुंदर संबंध भी समाहित होते है। नारी का बहन रूप भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। बहन का दूसरे बहन के प्रति स्नेह, त्याग, क्षमा, तथा दया का भाव निरंतर रहता है।

'चाक' उपन्यास में सारंग की फूफेरी बहन के रूप में रेशम को चित्रित किया है। वह उम्र में सारंग से पॉच वर्ष छोटी थी। रेशम विधवा होने के बाद भी गर्भवती होती है तब उसकी सास उसे परेशान करती है, गालियॉ देती है और घर की इज्जत बचाने के लिए देवर डोरिया की बॉह थामने को कहती है। जब रेशम डोरिया के साथ से इन्कार करती है तो दोनों की मार पिटाई तक झगड़ा होता है। रेशम की सास हुकुमकौर बच्चा गिराने के लिए शर्तियॉ दवा देती है लेकिन गिलास के हाथ से छुटने के कारण वह बच जाती है। इन सारी बातो के कारण सारंग को अपने बहन रेशम की चिंता लगी रहती है इसलिए रेशम से कहती है,"रेशम तू यहॉ चली आ बहन! मुझे डर लगता है। तुझे सूली चढ़ा देंगे तो मै इस गॉव में कैसे जीऊंगी। बुआ—फूफा को कैसे मुँह दिखाऊँगी। मेरे रहते तेरे प्राणों के लाले। मेरे घर आ जा तू। मुझे सबर तो रहेगा।"[१] इस पर रेशम सारंग को

---

१. मैत्रेयी पुष्पा — चाक — पृष्ठ २१

लगता है कि मेरी भोली बहन, अकेली औरत सिर्फ हौसले के दम पर पूरी जंग लड़ ले इससे उसे शक होता है। सारंग को अपने बहन की चिंता हमेशा घेरे रहती है। आखिर में वह उन लोगों का शिकार बनती है। सारंग अपनी बहन की हत्या का बदला लेना चाहती है। इसके लिए अपने पति का सहारा लेती है। न्याय मॉगने के लिए कोर्ट में जाती है। हायकोर्ट तक अपील करना चाहती है। यहॉ उसका बहन के प्रति प्रेम उजागर होता है। अपने बहन की हत्या के विरोध में वह उसके ससूरालवालों के साथ झगड़ती है। आखिर तक बहन के हत्यारों को शिक्षा मिले, इसलिए प्रयत्न करती है। अपना बहन के प्रति कर्तव्य निभाती है।

'अगनपाखी' की भुवन की भी बड़ी बहन का नाम मन्नू था। जिसका चौदह साल की अवस्था में ही ब्याह हो गया था। उसके शादी के बाद भुवन का जन्म हुआ। भुवन मन्नू से चौदह साल छोटी थी। मन्नू से चौदह साल छोटी थी। मन्नू अपनी अकेली मॉ और बहन को मिलने हमेशा ससूराल से गॉव आती थी। भुवन जब बड़ी होती है तब उसकी शादी की जिम्मेदारी भी मन्नू पर ही रहती है। मन्नू, के पति भुवन के लिए रिश्ता निकालते है। और भुवन की शादी कुॅवर विजयसिंह से होती है। जो एक मनोरूग्ण थे। लेकिन इसकी खबर मन्नू को बिल्कुल नहीं थी। अपने बहन के पति के पागल होने की बात का पता चलने पर वह बहुत दुखी होती है। और बार—बार रोती भी है। तब मन्नू का बेटा चन्दर अपनी मॉ को समझाता है कि रोने से क्या होगा? शादी से पहले देखना था। शादी के बाद पहली बार भुवन मायके आती है, तब सारी बातें अपनी बहन मन्नू को बताती है। तब मन्नू बहुत दुखी होती है।

भुवन भी अपनी बहन मन्नू से कहती है, "जिज्जी! मुझे लगता है कि मैं लड़की नहीं चिड़िया का बच्चा हूँ, घोंसला छोड़ने की आदत नहीं डाल पा रही। अम्मा बार–बार उड़ा देती है, मैं फिर–फिर यहीं आ दुबकती हूँ।"[१] इसप्रकार भुवन अपने मन की बातें बहन छोटी बहन की जिंदगी की चिंता में डुबी रहती है। भुवन गृहस्थी बसाना चाहती है, लेकिन उसके ससूरालवाले उसे संन्यासी बनाकर गले में कंठी पहनाते है। मन्नू अपने बहन के जोगिन बनने का सारा दोष उसकी सास के सिर डालती है। उसे गालियॉ देते हुए कहती है,"हरजाई रॉड, नास हो इसका, सत्यानास घाटकरी ने अपना खसम तो खदेड दिया, भुवन को सती का पाठ पढ़ा रही है। गले में जोगिन की कंठी डाल दी और कह रही है धियपूत जन।"[२] इसप्रकार गालियॉ देकर मन्नू अपना क्रोध भुवन के सास के प्रति व्यक्त करती है। चन्दर को याद आता है कि उसकी अम्मा भुवन के ब्याह के लिए भी पिताजी के सामने रोया करती थी और बाद भी अपने बहन के नसीब पर रोती है। भुवन भी अपने ससूराल की सारी बातें दिल खोलकर बता देती थी। दानों बहनों में प्यार बरकरार था।

❖निष्कर्ष :–

मैत्रेयी पुष्पा ने विवेच्य उपन्यासों में नारी के जो विविध रूप चित्रित किए है, उनमें नारी के प्रति लेखिका की संवदेना की गहराई पायी जाती है। उन्होंने नारी के विविध रूप चित्रित किए है। अपना स्थान निभाने के लिए नारी को कई पारिवारिक भूमिकाओं को निभाने के लिए उसे अनेक परिस्थितीओं का सामना करना पड़ता है। अपना कर्तव्य निभाने के लिए अनेक रूपों से गुजरना पड़ता है। जैसे माता,

---

१. मैत्रेयी पुष्पा – अगनपाखी – पृष्ठ ७६

२. मैत्रेयी पुष्पा – अगनपाखी – पृष्ठ ८८

पत्नी, सास, बहू, बेटी, बहन आदि।

परिवार में नारी का स्थान महत्वपूर्ण होता है। नारी के विभिन्न पारिवारिक भूमिकाओं में सर्वाधिक महत्वपूर्ण और गोरवशाली रूप माता का है। मॉ ही दया, क्षमा, ममता, स्नेह ओर वात्सल्य का रूप होती है। मॉ के स्वभाव में ही धैर्य, त्याग आदि गुण होते है। पत्नी का रूप निभाते उसे मॉ का भी कर्तव्य निभाना पड़ता है।

'चाक' की सारंग अपने बेटे चंदन की याद में तरसती है। अपने बेटे को वह पढ़ाई हेतू आगरा भेजती है। लेकिन बाद में उसे हर जगह चंदन दिखता है। वात्सल्यमयी मॉ के रूप में सारंग का चित्रण किया है।

'अगनपाखी' की भुवन की सास भी अपने पागल पूत्र विजयसिंह को अच्छा बनाना चाहती है। उसकी शादी कराती है ओर अपने पोते का मुँह देखना चाहती है। इसके लिए बहु को जोगिन बनाकर यज्ञ कराती है। भुवन की मॉ भी अपनी बेटी के शादी के लिए चिंतित होती है। भुवन की बहन मन्नू भी तीन बेटी की मॉ के रूप में अपनी जिम्मेदारीयॉ निभाती है।

बेटी के रूप में नारी अपने ही परिवार के लोगों से यातनाओं का शिकार बनती है। जैसे 'अगनपाखी' की भुवन अपने पिता के मृत्यू के बाद घर की सारी जिम्मेदारीयॉ निभाकर मॉ के साथ रहती है। अपनी मॉ के इच्छानुसार चलती है। और ससूराल से वापस आने पर दुबारा जाने से इन्कार करती है तब मॉ ही समझाबुझाकर उसे ससुराल भेजती है। अपनी जीवन की कुर्बानी देती है। बेटी परंपरागत और संस्कारीत रूप में भुवन हमारे सामने आती है। मन्नू भी भुवन के ससूराल जाने के बाद अपने मॉ का खयाल रखती है। एक बेटी होने का फर्ज निभाती है।

बेटी के रूप में नारी अपने ही परिवार के लोगों से प्रताड़ित होती है।

मैत्रेयीजी के विवेच्य उपन्यासों में पत्नी के पतिव्रता ओर पतिता दानों रूप देखने को मिलते है। 'अगनपाखी' की भुवन अपने पागल पति विजयसिंह के प्रति पतिव्रता धर्म का पालन करती है। और 'चाक' की रेशम पतिता रूप में हमारे सामने आती है। पत्नी के विविध रूपों में परंपरागत और आदर्श पत्नी का रूप भी हमारे सामने आता है। अन्याय के विरोध में विद्रोह करनेवाली सारंग भी हमारे सामने आती है। इस प्रकार पत्नी के विविध रूप विवेच्य उपन्यासों में प्रदर्शीत होते है।

विवेच्य उपन्यासों में सासद्वारा पीड़ीत बहू का रूप दिखायी देता है। 'चाक' की हुकुमकौर सास के परंपरागत रूप में चित्रित है, वह अपने बहू के साथ छलकपट करती है। 'अगनपाखी' की सास भी भुवन को प्यार करती है लेकिन अपने बेटे के खातिर उसे जोगिन बनाती है और बेटे के साथ सती जाने का पाठ पढ़ाती है।

बहू के रूप में नारी के विविध पहलू दृष्टिगोचर होते है। बहू का रूप कहीं उपेक्षित भी रहा है। 'चाक' की रेशम सास के अत्याचार सहती है, वह उपेक्षित प्रताड़ित होकर भी साहसी है। सास के अमानवीय शोषण का शिकार होती है। 'अगनपाखी' की भुवन बहू के आदर्श रूप में हमारे सामने आती है। विवेच्य उपन्यासों में बहू के रूप में नारी की अवहेलना, प्रताड़ना उपेक्षा दिखायी है।

विवेच्य उपन्यासों में एक बहन का दूसरे बहन के प्रति प्यार दिखायी देता है। 'चाक' की सारंग अपने बहन रेशम के हतया का बदला लेना चाहती है। 'अगनपाखी' की भुवन भी अपने ससूराल की सारे बातें जिज्जि से कहकर अपना मन हल्का करती है। मन्नू

भी अपने बहन को समझाती है उसका हौसला बढ़ाती है। एक बहन का दूसरे बहन से प्रेम कर्तव्य दिखाया है।

अत: मैत्रेयीजीने नारी के सभी रूप चित्रित किए है। नारी अपने में अनेक रूप समाएँ हुँए है क्योंकि अगर वह संघर्षशील, विद्रोही नारी है, तो एक परित्यक्ता भी है। 'चाक' और 'अगनपाखी' उपन्यासों में नारी के माता, बेटी, पत्नी, सास, बहू, बहन, भाभी आदि अनेक विविध रूप हमारे सामने आते है। पारिवारिक रूपो में एक नारी के विविध रूपों को उजागर करने में मैत्रेयीजी एक सफल लेखिक सिद्ध होती है। इसमें दो राय नहीं है।